शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ0प्र0) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन

(मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)

अग्र भाग　　　　पृष्ठ भाग

अग्र भाग　　　　पृष्ठ भाग

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय),
दयालबाग़, आगरा से कला संकाय में
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका :

प्रो0 रागिनी रॉय
अध्यक्ष
ड्रांइग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग़, आगरा।

शोध छात्र :

अभिजीत कुमार सिन्हा
ड्रांइग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग़, आगरा।

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ0प्र0) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन

(मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय),
दयालबाग, आगरा से कला संकाय में
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका :

प्रो0 रागिनी रॉय
अध्यक्ष
ड्रांइग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग़, आगरा।

शोध छात्र :

अभिजीत कुमार सिन्हा
ड्रांइग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग़, आगरा।

प्रमुख, कला संकाय की संस्तुति हेतु

प्रो0 उर्मिला आनन्द
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
कला संकाय, डी.ई.आई. दयालबाग़, आगरा।

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ0प्र0) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन

(मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)

सामग्री

1. शोध संकल्पना

2. साहित्य का पुनरवलोकन

3. परिकल्पना

4. लक्ष्य और उद्देश्य

शोध विषय

कार्य प्रणाली

1. अनुसंधान अभिकल्प

2. साधन–प्राथमिक और द्वितीय

(क) **प्राथमिक साधन**

(ख) **द्वितीय साधन**

3. प्रदत्त

4. सीमा

निष्कर्ष

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ0प्र0) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन

(मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक को मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)

सामग्री :

1. शोध संकल्पना :–

बाल्यकाल से ही अपने देश में चलने वाले मुद्राओं और करेंसी नोटों को अच्छी तरह से पहचानते है। इन्हें पैसा और रुपया कहते है। इसका प्रयोग विनयम के लिए होता है। प्राचीन काल से ही इसके प्रचलन को तथा रूपों में कलात्मक परिवर्तन को देखते हैं। जो हमारे भारतीय सांस्कृतिक, आर्थिक, भूगौलिक व ऐतिहासिक परिचय का घोतक है। ऋग्वेद की एक ऋचा (दोहे) में उल्लेखित–

।। क इमं दशभिर्मम इन्द्रं क्रीणाति धेनुभि।।

अर्थात् इंद्र की एक मूर्ति का मूल्य, जिसे एक ऋषि का मूल्य, जिसे एक ऋषि बेचना चाहते थे, दस गाय बताया गया है। वैदिक साहित्य में कुछ अन्य शब्द जैसे नीष्क, शतमान आदि की चर्चा हुई है जिसे कुछ लोग मुद्राओं के रूप में अनुमान करते है।

कला उत्पत्ति के मूल में हमें सांस्कृतिक भावना की प्रधानता दिखाई देती है। आदिम युग में मनुष्य ने पार्थिव वस्तुओं को आध्यात्मिक रूप देने के लिए आकाश, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, नदियाँ, पर्वत और सर्दी–गर्मी आदि के रहस्यों को आँकने का चयन किया उनसे उन सभी वस्तुओं में एक अदृश्य शक्ति की कल्पना की।

कला का विकास समयानुसार निरन्तर परिवर्तित होता रहा है और उसकी भाषा, अर्थ बदलते गये। कला एक ऐसा माध्यम है जो हमें उस समय के भाव और विचारों से अवगत कराते है। यही कला हमें हर वस्तु में देखने को मिलती है चाहे वो चित्र, भित्ती–चित्र, ग्रन्थ–चित्र, मूर्तिशिल्प कला, वास्तुकला या मुद्राऐं हो। सिन्धु घाटी सभ्यता से लेकर आज तक इन मुद्राओं के विभिन्न रूप समय–समय के अनुसार परिवर्तित होते रहे है। एक कलाकार इन मुद्रओं में बनी रूपों की कलात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है ये रूप प्रतीक चिन्ह तत्कालिक संस्कृति के अनुसार जैसे–पशु–पक्षी, वनस्पति, पेड़–पौधे, चक्र, पहाड़, देवी–देवताओं, राजा आदि होते थे।

अनुसंधान के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में मुद्राओं के विषय पर सेमिनार चल रहा था। जिसे मैंने उस सेमिनार को श्रोता बन कर सुना। उस दौरान शहज़ाद राय शोध संस्थान के निदेशक अमित राय जैन से मुलाकात हुई । वार्ता के दौरान उनसे पता चला की मुद्राओं के अपने मौलिक गुणों के कारण ही उसका सांस्कृतिक एवं कलात्मक महत्त्व है।

अतः मैंने शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) में संग्रहित मुद्राओं को देखने का मन बनाया और वहाँ पर मैंने पाया कि हर राजवंश की मुद्राओं की अलग–अलग विशेषतायें है और उन मुद्राओं का एक कलात्मक पक्ष भी है। इसी प्रकार तकनीकी पक्ष भी इनका बदलता रहा है। मैंने अपने विषय में ''मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश'' तक की मुद्राओं को ही लेते हुए उनके सांस्कृतिक एवं कलात्मक पक्ष को प्रस्तुत करने का विचार बनाया है। जिसके अन्तर्गत कुछ मुद्राओं में स्पष्ट रूप देखने को मिले है। उदाहरण– गुप्तकाल की कला के उत्कृष्ट नमूने तत्कालीन सोने के मुद्राओं में उत्कीर्ण आकृतियों में भी मिलते है। इस काल की कला में स्थूल शारीरिक एवं मांसल सौन्दर्य अपनी चरमावस्था को पहुँचा। इसी प्रकार गुप्तकाल में अलकंरण सज्जा मुद्राओं का शास्त्रीय ढंग से चित्रण, आत्मा का आह्लादपूर्ण सौन्दर्य, शान्तिस्थ प्रकृति के हर्ष–अर्मष आदि की अभिव्यक्ति में भारतीय कला अपनी प्रौढ़ावस्था को पहुँची।

2. साहित्य का पुनरवलोकन :–

मुद्राशास्त्र एक विज्ञान है। इसके ज्ञान से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथ्यों का निर्माण होता है। अंग्रेजी के न्यूमिस्मेटिक्स (Numismatics) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक नोमोस (Nomos) व लेटिन न्यूमिस्म (Numisma) से हुई है। प्राचीन साहित्य में उसे ''मुद्रा'' कहा गया है। अंग्रेजी में उसे ''कॉएन'' (Coin) कहते है। जो फ्रेंच भाषा के शब्द ''कॉएन'' (Coygne) से बना है। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और कला सम्बन्धी जानकारी के लिए प्राचीन मुद्राऐं बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

भारत की सबसे प्राचीन मुद्राएँ चाँदी की बनी है। इन्हें हम ''आहत'' या अंग्रेजी में 'पंचमार्कड सिक्का'' (Punch Marked Coin) कहते है इन्हें ये नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इन मुद्राओं पर अलग–अलग उत्कीर्ण चिन्ह (Symbol), अलग–अलग ठप्पों (Punch) से ठोके गये है। विद्वानों के अनुसार भारत में आहत मुद्राओं की शुरूआत, छठीं

शताब्दी ईसा पूर्व में हुई जबकि कुछ विद्वान इसे पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व में रखते है और कुछ अन्य इसकी शुरूआत और पूर्व से मानते है।

भारत में प्राचीन मुद्राओं पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ सर्वप्रथम 1891 में अलेक्जेण्डर कनिंघम महोदय ने प्रकाशित किया था। भारतीय सिक्के एक ऐतिहासिक परिचय, अमितेश्वर झा, Coins, प्रमेश्वरी लाल गुप्त द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का गहन अध्ययन किया व कला सामग्री व मुद्राओं से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित करने के लिए मैंने चित्र–सूची, शोध पत्र पत्रिकायें, दस्तावेज, बेवसाइट व भारतीय कला भवन, वाराणसी (उ०प्र०), मथुरा संग्रहालय, मथुरा (उ०प्र०), राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, वृन्दावन अनुसंधान संस्थान (उ०प्र०) आदि संस्थानों का भ्रमण किया।

3. परिकल्पना :–

मैंने इस विषय पर शोध करने के उद्देश्य से शोध परिकल्पना कर अपना शोध कार्य आरम्भ किया। जिसके की मैं शोध के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच कर और अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पाऊँ। मैं मुद्राओं पर बनी उन रूपों या उत्कीर्ण रिलिफ (Low & High) के प्रति अत्यधिक प्रभावित था वास्तव में एक कलात्मक रूप लिए हुए थे। हर राजवंश की मुद्राओं में उन रूपों का बाहरी, आन्तरिक परिवर्तन भी देखा। एक ही विषय के प्रतिक चिन्ह मिले और बदलते रहे ऐसा भी पाया। अतः मैंने उन रूपों की सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन करने की परिकल्पना तैयार की।

4. लक्ष्य और उद्देश्य :–

मुद्रायें किसी भी राजवंश या देश की आर्थिक स्थिति के परिचायक होते है। इस तंत्र के आधार पर ही सांस्कृतिक का विकास होता, सांस्कृतिक संरक्षण होता है। संस्कृति एक माणक के रूप उभर कर आती है। अतः इस संग्रहालय में संग्रहित हजारों मुद्राओं जो अभी तक अप्रकाशित रह गये है। उनकों मैं उत्कृष्ट दृष्टि से गहन अध्ययन करना चाहता हूँ क्योंकि मैं मूर्तिकला का विद्यार्थी रहा हूँ अतः इन मुद्राओं में उन मूर्ति तत्वों की भी खोज करना चाहता हूँ जिससे मुद्राऐं कलात्मक पक्ष सिरमोड़ (सर्वोकृष्ट) माने जाते है। इनमें बने विविध रूपों, संयोजन एवं प्रस्तुतीकरण का अध्ययन अभी तक निकहम कारणों से नहीं हो पाया है। मैं कलाविद्यार्थी होने के नाते अपना यह दायित्व समझता हूँ प्रस्तुत शोध में समाहित किया जाए। जिससे शोध का महत्व और अधिक उजागर होगा।

शोध विषय :–

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन (मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में) के अन्तर्गत लक्ष्य एवं उद्देश्य इस प्रकार है–

- मुद्राओं के परिवर्तित स्वरूप और उनके सांस्कृतिक विकास का अध्ययन।
- मुद्राओं पर उत्कीर्ण रूपों और विषयों का अध्ययन।
- मुद्राओं पर उत्कीर्ण कला रूपों को कलातत्वों रेखा, रंग, रूप, ताल, पोत और अन्तराल के आधार पर विवेचना करना।
- विभिन्न राजवंशों के परिवर्तित कलात्मक रूपों का तुलनात्मक अध्ययन।
- मुद्राओं के बदलते धातु व तकनीकी पक्ष का अध्ययन।

कार्य प्रणाली :–

1. **अनुसंधान अभिकल्प**– अपने पूर्वालोकन के आधार पर अपने शोध–विषय की रूपरेखा तैयार की। मेरा शोध एक वर्णात्मक अभिकल्प है।
2. **साधन–प्राथमिक और द्वितीय :–**

(क) **प्राथमिक साधन**– वास्तविक मुद्राऐं, शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) से प्राप्त।

(ख) **द्वितीय साधन**– लेख, पुस्तकें, प्रकाशित शोध–पत्रिकायें, संग्रहालय, समाचार–पत्र, सूची–पत्र, वेब साइट इत्यादि।

- विषय–वस्तु का शोध पर्यवेक्षक से विचार–विमर्श।
- विषय–वस्तु का श्री अमित राय जैन से साक्षात्कार।
- विषय–वस्तु का संग्रहालय के निर्देशकों से साक्षात्कार।
- वास्तविक मुद्राओं के नमुनों को देखना एवं समझना।
- कलाकारों से कलात्मक पक्ष से सम्बन्धित विचार–विमर्श करना।

3. **प्रदत्त**– विद्वानों से साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त विचारों का संकलन एवं अध्ययन।
4. **सीमा**– मैंने ''मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश''तक की मुद्राओं को लिया है जो शहज़ाद राय शोध–संस्थान, बड़ौत, (उ०प्र०) में एक प्रसिद्ध शोध संस्थान में

संग्रहित है यह संस्थान शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) के नाम से प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष :–

संग्रहालय में संग्रहित मुद्राओं के आधार पर मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पाऊँगा। इन मुद्राओं का कलातत्त्वों के आधार पर एक अध्ययन शोध को नयी दिशा प्रदान करने में सहायक होगा।

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ0प्र0) में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन
(मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)

विषय–वस्तु

भूमिका

- भारतीय प्राचीन मुद्राओं का उद्भव और विकास।

अध्याय प्रथम :

- *शहज़ाद राय शोध संस्थान में संग्रहीत भारतीय मुद्राओं का परिचय (मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश तक की मुद्राओं के विशेष संदर्भ में)।*

1.1 संस्थान की स्थापना, विकास एवं वर्तमान गतिविधियाँ।

1.2 संस्थान में उपलब्ध शोधपरक पुरासम्पदा का विषयवार परिचय।

अध्याय द्वितीय :

- *संस्थान में संग्रहीत मौर्य राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

2.1 मौर्य राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

2.2 मौर्य राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख।

2.3 कला तत्त्वों के आधार पर मौर्य राजवशं की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय तृतीय :

- *संस्थान में संग्रहीत शुंङ्ग तथा कण्व राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

3.1 शुंङ्ग तथा कण्व राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

3.2 शुंङ्ग तथा कण्व राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख।

3.3 कला तत्त्वों के आधार पर शुड्.ग तथा कण्व राजवंश की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय चतुर्थ :

- *संस्थान में संग्रहीत सातवाहन तथा चेदी राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

4.1 सातवाहन तथा चेदी राजवंश की मुद्राएँ एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

4.2 सातवाहन तथा चेदी राजवंश की मुद्राएँ लिपि–आलेख।

4.3 कला तत्त्वों के आधार पर सातवाहन तथा चेदी राजवंश की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय पंचम :

- *संस्थान में संग्रहीत शक् तथा पहल्व राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

5.1 शक् तथा पहल्व राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

5.2 शक् तथा पहल्व राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख।

5.3 कला तत्त्वों के आधार पर शक् तथा पहल्व राजवंश की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय षष्ट :

- *संस्थान में संग्रहीत कुषाण राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

6.1 कुषाण राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

6.2 कुषाण राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख।

6.3 कला तत्त्वों के आधार पर कुषाण राजवंश की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय सप्तम :

- *संस्थान में संग्रहीत गुप्त राजवंश की मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन।*

7.1 गुप्त राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण विषय (रूप व चिन्ह)।

7.2 गुप्त राजवंश की मुद्राऐं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख।

7.3 कला तत्त्वों के आधार पर गुप्त राजवंश की मुद्राओं का अध्ययन।

अध्याय अष्ठम् :

- *संस्थान में संग्रहीत मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश की मुद्राओं के निर्माण में प्रयुक्त धातु व तकनीक अध्ययन।*

8.1 मुद्राओं के निर्माण में प्रयुक्त धातु।

8.2 मुद्राओं के निर्माण में प्रयुक्त तकनीक।

उपसंहार :

परिशिष्ट :

मानचित्र

चित्र–सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कला–शब्द कोष

लिपि–शब्द कोष

शोध पत्र–पत्रिकायें

समाचार–पत्र

दस्तावेज

वेबसाइट्स

साक्षात्कार :

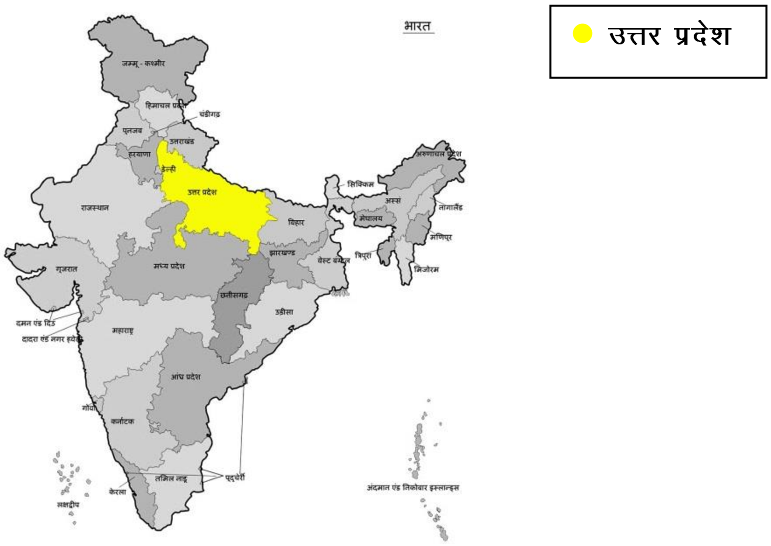

● बागपत, बड़ौत, उ0प्र0 शहज़ाद राय शोध संस्थान।

भारतीय प्राचीन मुद्राओं पर उत्कीर्ण विषय अध्ययन :—

प्राचीन भारत में ललित—कलाओं का बड़ा विकास हुआ था। मानव तथा पशु—पक्षियों के बाह्य स्वरूप का जैसा चित्रण प्राचीन चित्रकला तथा मूर्तिकला में मिलता है वैसा ही प्रदर्शन मुद्राओं पर भी मिलता है। द्वितीय शताब्दी ई०पू० में द्वितीय शताब्दी ई० तक देवी—देवताओं का क्या स्वरूप था, इसकी जानकारी मुद्राओं में प्राप्त उत्कीर्ण उनकी आकृतियों से भी होती है। पंचाल के मुद्राओं पर अनेक देवी—देवताओं के मूर्त रूप मिले है। उनमें भद्रादेवी और फाल्गुनी देवी का स्वरूप केवल मुद्राओं से ही ज्ञात हुआ है। गणों और जनपदों के मुद्राऐं पर शिव, कार्तिकेय और लक्ष्मी के विविध मूर्तन मिलते है। तक्षशिला, औदुम्बर तथा त्रिर्गत जनपद की मुद्राओं पर प्राचीन मंदिरों के अनेक रूप अंकित हुए हैं। सातवाहनों के मुद्राओं पर अनेक वृत वाले पर्वत बनाये गये हैं। वह यश का प्रतीक है।

हिन्द—यूनानी, शक—पहल्व, कुषाण आदि विदेशी राजाओं की आकृतियाँ उनके मुद्राओं पर बनी हुई हैं। उन राजाओं के स्वरूप का अभिज्ञान उनके मुद्राओं से होता है। गुप्त सम्राटों को उनके मुद्राओं पर वीणा बजाते हुए, शिकार करते हुए, धनुधारी योद्धा के रूप में, गज अथवा अश्व पर सवारी करते हुए आदि विभिन्न रूपों दिखलाया गया है। देव—आकृति के साथ प्रभामण्डल मिलता है। देवी—देवता को अपने वाहन के साथ भी प्रदर्शित किया गया है। ये मुद्राऐं कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं।

भारतीय प्राचीन मुद्राओं पर उत्कीर्ण लिपि—आलेख अध्ययन :—

भारत के आरम्भिक आहत मुद्राओं पर लेख अंकित नहीं हुए है मौर्य शासकों ने भी मुद्राओं पर अपना नाम नहीं लिखवाया है। उन पर विभिन्न क्षेत्रों के लिए कुछ खास चिन्ह बनाये गये है। मुद्राओं पर मौर्यकाल के पश्चात् लेख अंकित किये जाने लगे। ये लेख ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों में लिखे हुए है। उनकी भाषा प्राकृत है।

भारत में गुप्तों के पहले प्राकृत भाषा को बहुत मान्यता दी गयी थी। गुप्तकाल में संस्कृत भारत की भाषा हो गयी। गुप्त राजाओं ने ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में छन्दोबद्ध लेख लिखवाये है। उनमें सम्राटों की प्रशस्तियाँ वर्णित हुई है ये लेख गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों प्रकार के हैं।

भारतीय प्राचीन मुद्राओं पर उत्कीर्ण कला तत्त्वों के आधार पर अध्ययन :–

मुद्राओं पर कलाकार द्वारा उत्कीर्ण रेखाओं का आनन्द और मन्त्र–मुग्ध कर देने के समस्त गुण उपलब्ध थे। उत्कीर्ण रेखाओं की गति संयोजन का संपुजन व यर्थात् ऐसा था मानों कोई आधुनिक कलाकार किसी आकृति की संरचना बना रहा हो। आकृतियों के निर्माण में सीधी, वक्र और आयताकार आदि ज्यामितीय रूपकारों का प्रयोग है जो प्रायः सांकेतिक जान पड़ते है। इसमें स्वस्तिक, त्रिभुज, वृत, षट्कोण तथा आयताकार शामिल है। मुद्राओं से पर्याप्त सृजनशीलता, यर्थात् मौलिक उद्भावना, सौन्दर्य बोध, रूप विन्यासंगत वैविध्य, अभिव्यक्ति, रचना कौशल और निजी वैशिष्ट्य उपलब्ध होते है। इस प्रकार इन उत्कीर्ण आकृतियों ही सरलता, सुगमता तथा सूक्ष्म रेखांकन पद्धति आज के कलाकार के लिए महान प्रेरणा है। साथ ही साथ तकनीकी विशेषता के द्वारा उत्कीर्ण रेखा मुद्राओं के अग्र तथा पृष्ठ भाग पर बनाया गया है जिससे वह स्थाई रहे। ठप्पे, ढलाई विधि द्वारा धातु की मुद्राओं का संरचना किया गया था। धातु–ताम्र, कांस्य, चाँदी, सोना, शीशा, का प्रयोग किया गया था।

- **रेखा** :– सीधी, वक्र, रूपाकारों का प्रयोग बलिष्ठ आकृतियों की रेखाएँ आदि शामिल हैं।
- **रंग** :– काला हरा, भूरा, नीला रासायनिक प्रक्रिया द्वारा विधि पटीना कहलाता है। तांबा, कांस्य, चाँदी, सोना का स्वभाविक रंग।
- **रूप** :– आयत, षष्ट्कोण, डमरूनुमा, वक्रशलाख, वृत्त।
- **तान** :– आन्तरिक व बाह्य रिलिफ।
- **पोत** :– खुरदरी, समतल, उभार।
- **अन्तराल** :– निम्नस्तरीय एवं उच्चस्तरीय माप।

<u>अंतराल</u> – बेन्ट–बार

1. मुद्रा – गंधार जनपद

   भार – 11.46 ग्राम (लगभग)

   आकार – 43X22 मि.मी. (लगभग)

   धातु – रजत

2. मुद्रा – मगध जनपद

भार – 3.45 ग्राम (लगभग)

आकार – 25X23 मि.मी. (लगभग)

धातु – रजत कर्षापन

3. मुद्रा – मौर्य साम्राज्य

भार – 2.96 ग्राम (लगभग)

आकार – 10X15 मि.मी. (लगभग)

धातु – रजत कार्षापण

अतः निष्कर्ष रूप मैं यह कहना चाहूँगा कि मुद्राओं का सांस्कृतिक एवं कलात्मक पक्ष एक अवश्यक पक्ष है। मैं अपने इस शोध के माध्यम से इस पक्ष का उजागर करते हुए उसमें निरन्तर परिवर्तित रूप को प्रस्तुत कर एक नये आयाम रखने का प्रयास करूँगा।

दिनांक **शोध छात्र**

अभिजीत कुमार सिन्हा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.	कल्हण	राजतंरिगणी	चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
2.	कृष्णन, सर्वपल्ली	भारतीय दर्शन भाग–प्रथम भाग–द्वितीय	राजपाल एण्ड संस प्रकाशन
3.	गुप्त, परमेष्वरी	भारत के पूर्व कालीन सिक्कें	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4.	गुप्ता, परमेष्वरी	प्राचीन भारतीय मुद्राएँ	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5.	झा, अम्रतेश्वर	भारतीय सिक्के (एक ऐतिहासिक परिचय)	आई.आई.आर.एन.एस. प्रकाशन, नासिक आई.एस. बी.एन.–81–86786–14–7
6.	सिंह, ओंकारनाथ	गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राऐं	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7.	गुप्ता, सुमन्त	गुप्तवंषीय अभिलेखों का धार्मिक अध्ययन	अजय बुक सर्विस, नई दिल्ली–110002,1980
8.	राय, नीहाररंजन	मौर्य तथा मौर्योत्तर कला	शब्दषिल्पी द्वारा प्रगति प्रिंटर्स, दिल्ली–110032, 1979

BIBLIOGRAPHY

1.	Agrwal, Bhanu, Rai, Subas	Punch-Marked Coin	
2.	Altekar, A.S.	The Coinage of the Gupta empire	Numismatic Society of India Banaras Hindu University
3.	Agrawal, V.S.	Indian Art	Varanasi Prithivi Prakashan,1965
4.	Coomarasamy, Ananda K.	History of Indian and Indian Art	Museum of Fine Arts, Boston,May-15,1926

5.	Roy, Bahadur Dayal	Coins and Discription	Department of Publication Institution United Origen, 1930
6.	Dutta, Mala	A Study of the Satavahana Coinage	Harman publicshing house, New Delhi, 1990 ISBN – 81-85151-39-3
7.	Gupta, Parmeshwari Lal	Coins	National Book Trust, India ISBN-978-81-237-1887-3, New Delhi-70, 1969
8.	Gupta, Parmeshwari Lal	Punch-Marked Coin Government Museum	The government of Andhra Pradesh in the Andhara Pradesh 1960
9.	Goyal, S.R.	An Introduction to Gupta Numismatics	Kasumanjali Prakashan Jodhpur, India 1994
10.	Handa, Devendra	Tribal Coins Of Ancient India	Aryan Books International New Delhi, India 2007 ISBN – 81-7305-317-0
11.	Handa, Devendra	Early Indian Coins From Sugh	Sundeep Prakashan New Delhi, 2006 ISBN-81-7574-161-9
12.	Havell, E.B.	A Handbook of Indian Art	Indic Academy Varanasi. 1972
13.	Jha, D.N.	Ancient India in Historical Outline	Delhi, Manohar, 1998
14.	Kothari, Narendra	Ujjayini Coins	Editor by-Dilip Raigor
15.	Lahiri, A.N.	Corpus of Indo Greek Coins	Calcutta, Poddar Publications, 1965.
16.	Mukherjee, B.N.	The Disintegration of the Kushana Empire	Varanasi, Banaras Hindu University, 1976
17.	Murphy, Poul	Kosala State Region C. 600-470BC, Silver Punchemarked Coinage	

18.	Murty, Krishna K.	Mythical Animals in India Art	Abhinav publication E-37,hauz khas,New Delhi-110016 1985
19.	Mookerje, Radha Kumud	Chandragupta Maurya and his Times	Motilal Bansidass ISBN-81-208-0405-8
20.	Puri, B.N.	India Under the Kushans	Bombay, Bharatiya Vidya Bhawan, 1965
21.	Rajgor, Dilip	Punch Marked coin of Early Historic India	
22.	Smith, Vincent A	Coins of Ancient India Catalogue of the coins in the India museum Calcutta Vol.- 1	Indological Book House Delhi,India,Varanasi. 1972
23.	Sharva, Satya	The Kushana Numismatis	Pranava Parkashan, New Delhi 1985

ENCYCLOPEDIA

MAGAZINE

1.	South India	Coins	Published by : Marudhar Art, Benguluru, India
2.	गौड़, दिलीप रॉय	भारतीय सल्तनत कालीन सिक्के	प्रकाशित – डॉ0 दिलीप रॉय गौड़, (लेखक व प्रकाशक)

पत्रिकायें

1.	गुलल्क (वार्षिक)		भारतीय मुद्रा परिचय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

समाचार–पत्र

1. अमर उजाला, बड़ौत, उ0प्र0
2. दैनिक जागरण, बड़ौत, उ0प्र0
3. दैनिक जनवाणी, 03/06/2013 मेरठ, उ0प्र0
   (समाचार–पत्रों में प्रकाशित समाचारों के संदर्भ)

दस्तावेज

1. शहज़ाद राय शोध से सम्बन्धित दस्तावेज

Websites

1. www.acientcoins.co/gandhara/gandhara.html
2. www.bhu.ac.in/kala/gallery-coin.html
3. www.bhartiyapaksha.com/?P=5723
4. www.nationalmuseumindia.gov.in/collection.asp
5. orissa.gov.in/e-magazine/orissareview/spet2004/english Pdf/ acient coins.Pdf
6. www.rbi.org.in/currency/museum/c-ancient/html

मौर्य राजवंश की मुद्राएं

अग्र भाग पृष्ठ भाग

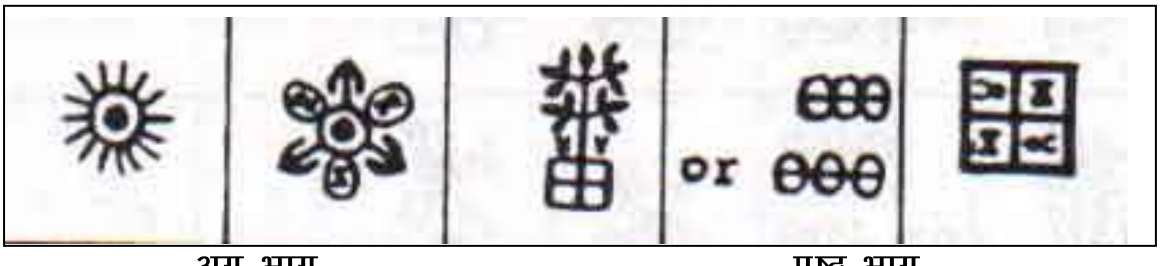

अग्र भाग पृष्ठ भाग

शुंङ्ग राजवंश की मुद्राऐं

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

सातवाहन राजवंश की मुद्राऐं

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

पहल्व राजवंश की मुद्राऐं

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

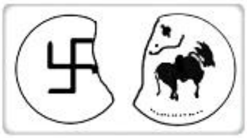

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

कुषाण राजवंश की मुद्राऐं

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

गुप्त राजवंश की मुद्राऐं

अग्र भाग

पृष्ठ भाग

अग्र भाग

पृष्ठ भाग